जन्मजात प्रत्ययों का खण्डन

बुद्धिवादी दार्शनिक ज्ञान को सार्वभौम और अनिवार्य मानते हैं और ऐसा ज्ञान अनुभव से प्राप्त नहीं हो सकता। अतः वे ज्ञान को जन्मजात और बुद्धिजन्य मानते हैं। ऐसा ज्ञान जन्म से ही मानव बुद्धि में विद्यमान रहता है।

लेकिन लॉक अनुभववादी दार्शनिक हैं तथा अनुभव से पूर्व किसी भी ज्ञान को वे नहीं मानते। साथ ही वे तो मानते हैं कि मानव का मन जन्म के समय कोरी पट्टी के समान होता है जिस पर कुछ भी अंकित नहीं होता। अतः जन्मजात प्रत्ययों के खण्डन के लिए वे निम्नलिखित तर्क देते हैं →

1. बुद्धिवादी दार्शनिक सार्वभौम और अनिवार्य ज्ञान को जन्मजात मानते हैं, लेकिन लॉक कहते हैं कि ऐसा कोई सिद्धांत है ही नहीं जिसे विश्व के सभी लोग एकमत होकर स्वीकार करते हों।

2. बुद्धिवादी कहते हैं कि जन्मजात प्रत्यय मानव बुद्धि में जन्म से ही विद्यमान होते हैं लेकिन हमें हमेशा उनकी प्रतीति नहीं होती। लॉक कहते हैं कि प्रत्ययों का होना और प्रतीति न होना असंभव है। यदि जन्मजात ज्ञान होता तो उसकी चेतना भी अवश्य होती।

3. लॉक कहते हैं कि यदि कोई अनिवार्य व सार्वभौम ज्ञान है तो वह सभी में होना चाहिए। जबकि बालकों, पागलों, मूर्खों को किसी सार्वभौम

नियम का ज्ञान नहीं होता।

4. बुद्धिवादी कहते हैं कि तादात्म्य और विरोध का नियम जन्मजात प्रत्यय है। लेकिन लॉक कहते हैं कि किसी भी व्यक्ति को इन नियमों का ज्ञान बिना अनुभव के नहीं होता। यदि ये जन्मजात होते तो इन्हें सीखने की आवश्यकता नहीं होती।

5. बुद्धिवादी नैतिक नियमों को जन्मजात मानते हैं। लेकिन लॉक कहते हैं कि ऐसा कोई नैतिक नियम नहीं है जिसे सभी एक मत होकर स्वीकार करते हों। प्रत्येक समाज के व्यवहार के नियम भिन्न-भिन्न होते हैं। अतः इन्हें जन्मजात नहीं माना जा सकता।

6. बुद्धिवादी ईश्वर के प्रत्यय को जन्माजात मानते हैं; पर लॉक कहते हैं कि यदि ऐसा होता तो ईश्वर के अस्तित्व के संबंध में इतना विवाद क्यों होता।

7. बुद्धिवादी कहते हैं कि जन्मजात प्रत्यय होते हैं पर बुद्धि विकसित होने पर हम उन्हें जानते हैं। लॉक कहते हैं कि यह तर्क संतोषजनक नहीं है। किसी नवजात शिशु में भूख, प्यास के भी अस्पष्ट से प्रत्यय होते हैं तो जन्मजात प्रत्ययों का तो प्रश्न ही नहीं उठता।

8. इस प्रकार लॉक के अनुसार कोई भी ज्ञान जन्मजात नहीं होता। न नैतिक नियम, न ईश्वर का प्रत्यय, न गणित के प्रत्यय। समस्त ज्ञान अनुभव के ही द्वारा धीरे-धीरे प्राप्त होता है।

प्राथमिक और गौण गुण

लॉक के अनुसार जगत की रचना द्रव्यों से हुई है तथा द्रव्य गुणों और क्रियाओं के आधार हैं।

द्रव्य में दो प्रकार के गुण पाए जाते हैं -

1. प्राथमिक गुण → ये गुण द्रव्य स्वयं में होते हैं। ये द्रव्य के स्वभाव होते हैं, इन्हें द्रव्य से अलग नहीं किया जा सकता। जैसे बर्फ के टुकड़े को उसकी आकृति से अलग नहीं किया जा सकता। जैसे - पत्थर का ठोसपन, जल का द्रवत्व आदि। ये कभी बदलते नहीं हैं।

2. गौण गुण → ये गुण ज्ञाता की संवेदना पर आश्रित होते हैं जैसे - स्वाद, भार, सौंदर्य आदि। संवेदनाओं के बदलने पर ये गुण भी बदल जाते हैं। इनमें व्यक्तिगत अंतर होता है, जैसे एक ही वस्तु किसी व्यक्ति को भारी तथा किसी को हल्की लग सकती है।

सरल एवं मिश्र (जटिल) प्रत्यय

लॉक के अनुसार ज्ञान प्रत्ययों से होता है। ये प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं -

1. सरल प्रत्यय → ये प्रत्यय इंद्रिय ज्ञान के रूप में प्राप्त होते हैं। ये बाह्य एवं आंतरिक विषयों से स्वतः उत्पन्न होते हैं जैसे - रंग, आकार, स्वाद आदि। इनमें किसी प्रकार का मिश्रण नहीं होता। ये तत्काल ही साक्षात् और स्पष्ट रूप में ग्रहण होते हैं। लॉक कहते हैं कि सरल प्रत्ययों के ग्रहण में हमारी बुद्धि निष्क्रिय रहती है तथा इंद्रियाँ बाह्य संवेदनाओं को ज्यों का त्यों ग्रहण कर लेती हैं। अनेक सरल प्रत्ययों के योग से मिश्र प्रत्यय बनते हैं।

2. मिश्र प्रत्यय → सरल प्रत्ययों को जोड़कर, इन्हें विभिन्न संबंधों में व्यवस्थित रखकर बुद्धि द्वारा मिश्र या जटिल प्रत्यय बनाए जाते हैं। ये प्रत्यय बुद्धि की सक्रियता से ही बनते हैं। जैसे - सद्गुण, दर्शन, समाज, संस्कृति, विवाह आदि के प्रत्यय।

मिश्र प्रत्यय कैसे बनते हैं → छः चरण -

A. सरल प्रत्ययों का ग्रहण → सर्वप्रथम इंद्रिय-संवेदना के रूप में ये प्रत्यय अलग-अलग क्रम में बुद्धि को प्राप्त होते हैं। बुद्धि निष्क्रिय रहकर इन्हें यथावत् ग्रहण कर लेती है।

B. सरल प्रत्ययों का धारण → ज्ञान के लिए आवश्यक है कि इन संवेदनाओं को धारण किया जाए। यह कार्य स्मृति का है।

C. प्रत्ययों का पृथक्करण → बुद्धि की यह पहली सक्रिय अवस्था है। यह असंख्य संवेदनाओं को अलग-अलग वर्गों में विभाजित करती है।

D. प्रत्ययों का सन्तुलन → इसका अर्थ है प्रत्ययों को क्रम से व्यवस्थित करना। यहाँ बुद्धि सरल प्रत्ययों को वर्गों के अनुसार क्रम से व्यवस्थित करती है।

E. प्रत्ययों का मिश्रण → अलग-अलग वर्गों में क्रम से व्यवस्थित प्रत्ययों को बुद्धि फिर से व्यवस्थित रूप से मिश्रित करती है।

F. नामकरण → व्यवस्थित मिश्रित प्रत्यय जिस भी प्रकार का होता है, उसे नाम दिया जाता है - जैसे मेज, कक्षा, कॉलेज आदि।

इस प्रकार लॉक मानते हैं कि ज्ञान की प्रक्रिया सरल से मिश्र प्रत्यय की ओर चलती है। चूंकि सरल प्रत्यय अनुभव अर्थात इंद्रिय संवेदन से प्राप्त होते हैं, बुद्धि जिनकी व्याख्या करती है। अतः अनुभव ही प्राथमिक है, अनुभव से ही ज्ञान की सामग्री आती है। इस प्रकार अनुभव के बिना ज्ञान संभव ही नहीं है।

मिश्र प्रत्यय तीन प्रकार के होते हैं -

1. द्रव्य → द्रव्य सरल प्रत्ययों का योग है। द्रव्य की सत्ता स्वतंत्र है तथा यह अनेक गुणों का आधार है। जैसे मेज एक द्रव्य है। हमें इसके रूप, रंग, आकार आदि का प्रत्यक्ष होता है और इनके आधार के रूप में हम मेज को जानते हैं। क्योंकि गुण बिना आधार अर्थात् द्रव्य के नहीं रह सकते।

2. पर्याय → पर्याय भी सरल प्रत्ययों के योग से बनते हैं और द्रव्य पर आश्रित हैं। ये स्वतंत्र नहीं हैं। ये दो प्रकार के होते हैं -

(A) सरल पर्याय → यदि एक ही प्रकार की अनेक वस्तुएँ एक वर्ग में रखी जाएँ तो वह सरल पर्याय है। जैसे - दर्जन तथा कोड़ी के प्रत्यय।

(B) मिश्र पर्याय → इसमें भिन्न-भिन्न प्रकार के सरल प्रत्यय होते हैं। जैसे सौंदर्य के प्रत्यय में रूप, रंग, आकृति, बनावट आदि विभिन्न प्रकार के सरल प्रत्यय शामिल हैं।

3. संबंध → किन्हीं दो वस्तुओं या व्यक्तियों में तुलना या समानता के आधार पर निर्मित प्रत्यय संबंध का पर्याय है। जैसे - पिता-पुत्र, बड़ा-छोटा, रात-दिन, कार्य-कारण आदि। ये संबंध सापेक्ष होते हैं। एक ही व्यक्ति एक स्थान पर पिता व दूसरे स्थान पर पुत्र होता है।